IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

भारतीय ज्ञान प्रणाली और सामुदायिक जीवन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ. प्रियंका पांडेय
अतिथि विद्वान -समाज शास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System - IKS) प्राचीन वैदिक, उपनिषदिक, बौद्ध, जैन तथा लोक परंपराओं में निहित एक समग्र दर्शन, विज्ञान, नैतिकता और संस्कृति का भंडार है। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से सामुदायिक जीवन (community life) का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है, विशेष रूप से ग्रामीण एवं आदिवासी संदर्भों में। सामाजिक एकता, सामूहिक नैतिकता, पारस्परिक निर्भरता तथा पर्यावरणीय संतुलन जैसे अवधारणाओं के आधार पर यह दर्शाता है कि IKS सामुदायिक संस्थाओं जैसे पंचायत, संयुक्त परिवार, त्योहारों तथा सहकारी जीवन को मजबूत बनाता है। आधुनिकता एवं वैश्वीकरण के दौर में IKS असमानता, पर्यावरण संकट तथा सांस्कृतिक क्षरण जैसी चुनौतियों के लिए वैकल्पिक मॉडल प्रदान करता है। द्वितीयक साहित्य के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुरूप IKS को समकालीन समाजशास्त्र में समाहित करने से समावेशी एवं सतत विकास संभव है। यह प्रणाली सामंजस्यपूर्ण एवं आत्मनिर्भर सामुदायिक जीवन के लिए प्रासंगिक बनी हुई है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

कीवर्ड्स (Keywords)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS), सामुदायिक जीवन, समाजशास्त्रीय विश्लेषण, सामाजिक संस्थाएँ, पंचायती राज, पारंपरिक ज्ञान, सतत विकास, सामाजिक एकता

परिचय (Introduction)

भारतीय समाज सदियों से अपनी स्वदेशी ज्ञान परंपराओं से प्रभावित रहा है, जो केवल आध्यात्मिक या शैक्षिक क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि दैनिक सामाजिक संरचना में गहराई से व्याप्त हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) वेदों, उपनिषदों, धर्मशास्त्रों, अर्थशास्त्र तथा क्षेत्रीय लोक ज्ञान से निर्मित एक समग्र विश्वदृष्टि प्रस्तुत करती है, जिसमें व्यक्ति, समाज, प्रकृति तथा ब्रह्मांड के बीच सामंजस्य पर बल दिया जाता है।

सामुदायिक जीवन—जिसमें ग्राम पंचायतें, संयुक्त परिवार प्रणाली, जाति-आधारित विभाजन (ऐतिहासिक जटिलताओं सहित), सामूहिक उत्सव तथा निर्णय प्रक्रिया शामिल हैं—इन परंपराओं से ही पोषित होता है। समाजशास्त्र, जो सामाजिक संबंधों, मानदंडों तथा संस्थाओं का अध्ययन करता है, IKS के साथ गहन अंतर्संबंध रखता है। विचारकों जैसे जी.सी. पांडे ने आत्मबोध आधारित समाजशास्त्र की वकालत की है, जिसमें आत्म-ज्ञान सामूहिक समझ को निर्देशित करता है तथा पश्चिमी केंद्रित मॉडलों से आगे बढ़ता है।

वर्तमान भारत में शहरीकरण एवं वैश्वीकरण के बीच IKS आधुनिकता के प्रतिवाद के रूप में कार्य करता है, जिसमें सांस्कृतिक विविधता, नैतिक शासन तथा पर्यावरणीय संतुलन को प्राथमिकता दी जाती है। यह पत्र IKS के सामाजिक व्यवस्था, सामुदायिक बंधन तथा लचीलापन पर प्रभाव का विश्लेषण करता है, विशेषकर ग्रामीण एवं आदिवासी संदर्भों में। यह समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण (कार्यात्मक, संघर्ष तथा व्याख्यात्मक) से

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

IKS का अध्ययन कर सतत विकास एवं सामाजिक सामंजस्य के लिए इसके निहितार्थों को उजागर करता है।

विधि (Methodology)

यह अध्ययन गुणात्मक एवं डेस्क-आधारित अनुसंधान है, जो द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर करता है। IKS तथा समाजशास्त्र पर 2004-2025 के बीच प्रकाशित शोध पत्रों, जर्नलों, रिपोर्टों तथा नीति दस्तावेजों (जैसे NEP 2020) की व्यवस्थित समीक्षा की गई है।

थीमैटिक विश्लेषण के माध्यम से निम्नलिखित पैटर्न पहचाने गए: (1) IKS द्वारा आकारित सामाजिक संस्थाएँ (पंचायत, वर्ण-जाति व्यवस्था); (2) सामुदायिक प्रथाओं में नैतिक एवं नैतिक अर्थव्यवस्था; (3) आधुनिक चुनौतियों (आदिवासी विकास, सततता) से अंतर्संबंध। समाजशास्त्रीय सिद्धांत (दुर्खाइम की सामाजिक एकजुटता, वेबर की पारंपरिक प्राधिकार तथा भारतीय विचारक पांडे, उबेरॉय) विश्लेषणात्मक ढांचा प्रदान करते हैं। प्राथमिक डेटा संग्रह (क्षेत्र कार्य) नहीं किया गया क्योंकि यह अन्वेषणात्मक पत्र है। सीमाएँ: द्वितीयक व्याख्याओं पर निर्भरता तथा प्रकाशित अंग्रेजी/हिंदी साहित्य में संभावित पक्षपात। भविष्य में नृवंशविज्ञानीय अध्ययन से गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

समाजशास्त्रीय विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली अतीत की कोई अवशेष नहीं, अपितु एक जीवंत शक्ति है जो समग्र नैतिकता, सामूहिक संस्थाओं तथा प्रकृति-केंद्रित प्रथाओं के माध्यम से सामुदायिक जीवन को बनाए रखती है। वैदिक मंत्रों से सामाजिक सामंजस्य से लेकर पंचायती राज प्रणाली (विशेषकर PESA के अंतर्गत आदिवासी क्षेत्रों में) तक, IKS सामाजिक एकता एवं आधुनिक व्यवधानों के विरुद्ध लचीलापन प्रदान करता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

NEP 2020 द्वारा IKS को शिक्षा एवं नीति में एकीकृत करने के प्रयास से समानता, पर्यावरण संरक्षण तथा सतत सामुदायिक विकास के मार्ग प्रशस्त होते हैं। फिर भी जाति पदानुक्रम तथा डिजिटल/वैश्विक संदर्भों में अनुकूलन जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अंततः, समाजशास्त्र में IKS का समावेश वैश्विक ज्ञान को समृद्ध करता है तथा बहुलवादी, मानव-केंद्रित विकल्प प्रदान करता है—जिससे 'विकसित भारत' में प्राचीन ज्ञान एवं आधुनिक प्रगति पर आधारित सामुदायिक जीवन फल-फूल सके।

संदर्भ (References)

[1].भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक और शैक्षिक योगदान। Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 2025।

[2].भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS): इसका सामाजिक जीवन में प्रभाव। IJSAT, 2025।

[3].भारतीय समाज में भारतीय ज्ञान एवं परंपरा का समाजशास्त्रीय विश्लेषण। IJSRHSS, 2025।

[4].भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्य: एक अध्ययन। NIJMS, 2025।

[5].शिक्षा और संस्कृति: भारतीय ज्ञान परंपरा और मुसहर समुदाय। ResearchGate, 2026।

[6].भारतीय ज्ञान प्रणाली का विकसित भारत। TIJER, 2025।

[7].NEP 2020 संबंधित IKS दस्तावेज तथा गांधीवादी संदर्भ (विभिन्न स्रोत, 2025)।